महानगर और आधुनिक हिंदी साहित्य: संघर्ष, चेतना और पहचान

गोरकनाथ

शोधार्थी, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263399

ABSTRACT:

हिंदी एवं आधुनिक हिंदी साहित्य में कई महत्वपूर्ण विषय जैसे ग्रामीण जीवन, किसान, नगर, प्रदूषण, भारतीय भाषा एवं सांस्कृतिक भाषा और महानगरीय जीवन सम्बंधित समस्याएँ जैसे भौतिकवाद, नैतिक पतन, व्यक्तिगत अकेलापन, आर्थिक शोषण और मानवीय संबंधों के व्यवसायीकरण का चित्रण मिलता है।

KEYWORDS:

महानगर, आधुनिक हिंदी साहित्य, महानगरीय चेतना, संघर्ष, पहचान.

पृष्ठभूमि:

हिंदी एवं आधुनिक हिंदी साहित्य में कई महत्वपूर्ण विषय एवं समस्याओं को लेकर लिखा जा रहा है। जैसे की ग्रामीण जीवन, किसान, नगर, प्रदूषण, भारतीय भाषा एवं सांस्कृतिक भाषा और महानगरीय जीवन सम्बंधित समस्याएं आदि कई विषयों को लेकर साहित्य या कथाकारों ने अनेक समस्याएँ एवं जीवन को कथा केंद्र बनाया है, जिसमें महानगर भी एक महत्वपूर्ण विषय है। महानगर, जिसे हम अक्सर 'शहर' के नाम से अभिहित करते हैं, यह केवल ईंट और पत्थर, कंक्रीट और सड़कों का जाल नहीं है, वरन यह एक जीवंत, गतिशील और जटिल इकाई है। इसे उच्च जीवन के सपनों का गढ़ माना जाता है। भूमंडलीकरण और बाजारवाद के प्रभाव से गाँव से क़स्बा, क़स्बा से नगर, नगर से महानगर की उत्पत्ति मानी जाती है और इसके अलावा भी कई विषय है जो एक नवीन दृष्टि की ओर ले जाती है। कुबेरनाथ राय जी महानगर को केंद्र में रखकर लिखते हैं की "हर बड़े शहर का अपना एक निजी मनोविज्ञान होता है। महानगर का मन क़स्बा मन से स्वभाव में भिन्न

होता है”। यानि नगरीय चेतना यह एक नवीन अवसरों का केंद्र है और साथ ही इसमें अकेलापन, अलगाव और संघर्षों की भी त्रासदी एवं प्रताड़ना भी देखने को मिलती है। आधुनिक हिंदी साहित्य में, महानगर एक प्रमुख विषय के रूप में उभर कर सामने आया है, हिंदी साहित्यकारों ने अपने साहित्य में महानगरीय जीवन की चेतना को उपन्यास, कहानी, और नाटकों में हताशा, घुटन, बेरोजगारी और अकेलापन त्रासदी आदि मानवीय चेतना, उसके संघर्षों और उसकी पहचान के सवालों को नए सिरे से परिभाषित करने का प्रयास करते हैं।

महानगर की चेतना:

आधुनिक हिंदी साहित्य में महानगरीय चेतना शहरों के जटिल यथार्थ को दर्शाती है, जिसमें औद्योगीकरण, आधुनिकीकरण और नगरीकरण के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली समस्याएं जैसे भौतिकवाद, नैतिक पतन, व्यक्तिगत अकेलापन, आर्थिक शोषण और मानवीय संबंधों के व्यवसायीकरण पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। यह चेतना आम आदमी की पीड़ा, संघर्षपूर्ण जीवन, बेरोजगारी, महँगाई और पहचान के खोने जैसे मुद्दों को उजागर करती है, जो शहरी जीवन के अंतर्विरोधों और त्रासदी को दर्शाती हैं। यह एक ऐसी चेतना है जो पारंपरिक ग्रामीण जीवन की सरलता और सामूहिकता से भिन्न है। महानगर में व्यक्ति अकेला है, वह भीड़ में रहकर भी अकेला है। उसकी चेतना पर एक निरंतर दबाव बना रहता है, जैसे सफलता का, प्रतिस्पर्धा का और अपने अस्तित्व का। ऐसे कई समस्याओं को आधुनिक साहित्य में साहित्य एवं कथाकारों ने अंकित किया है। लेखकों ने भूख्मरी, बेरोजगारी, एवं अकेलेपन जैसी समस्याओं को अपने कथासाहित्य में विभिन्न पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। उदाहरण के लिए, निर्मल वर्मा की कहानियों में पात्र अक्सर महानगर की सड़कों पर भटकते हुए, अपने अतीत और वर्तमान के बीच एक पुल बनाने की कोशिश करते हुए दिखते हैं। जैसे ’परिंदे’ कहानी की पात्र लतिका जो अपने अतीत को न भुला कर अपने अकेलेपन के कारण अपने मन को नगर जीवन के मुताबिक चरित्रित नहीं कर पाती है और अपने बीते हुए मि. होबार्ट के प्रेम को नजर अंदाज कर दुःखमय जीवन को व्यतीत करती हुई अंत में अपने बीते हुए कल एवं मानसिक द्वन्द को भुला कर आगे बढ़ती है, “अब वैसा दर्द नहीं होता सिर्फ उसकी याद आती है जो पहले कभी होता था”।

महानगर का संघर्ष:

महानगर केवल भौतिक संघर्षों का स्थान नहीं है, बल्कि यह मानसिक और भावनात्मक संघर्षों का केंद्र भी है, जो आधुनिक हिंदी साहित्य में इस संघर्ष को कई रूपों में दर्शाया गया है। आर्थिक संघर्ष: महानगर में जीवनयापन की लागत बहुत अधिक होती है, जिसके कारण व्यक्ति को निरंतर आर्थिक संघर्ष करना पड़ता है। यह संघर्ष न केवल गरीबी से जूझने का है, बल्कि यह एक बेहतर जीवनशैली पाने और समाज में अपना स्थान बनाने का भी है। लेखकों ने इस संघर्ष को पात्रों की दैनिक दिनचर्या, उनके सपनों और उनकी निराशाओं के माध्यम से चित्रित किया है। ऐसा ही एक पात्र जो जगदम्बा प्रसाद दीक्षित का उपन्यास 'कटा हुआ आसमान' में 'प्रोफेसर नोटियाल' गाँव से शहर आकर संघर्ष करता हुआ अपनी त्रासदी को व्यक्त करता है, "यह मुंबई शहर है, अजनबी आवाजों का शहर एक एक अनजानी मिट्टी का नगर"।

पहचान का संघर्ष: महानगर में व्यक्ति को अपनी पारंपरिक पहचान को त्यागकर एक नई पहचान गढ़नी पड़ती है। यह संघर्ष न केवल बाहरी दुनिया से है, बल्कि अपने भीतर भी है। यह एक ऐसा संघर्ष है जहां व्यक्ति अपनी जड़ों से कटकर एक नई भूमि में स्वयं को स्थापित करने की कोशिश करता है। यह संघर्ष अक्सर सांस्कृतिक टकराव का रूप ले लेता है, जहां पारंपरिक मूल्य आधुनिक मूल्यों के साथ टकराते हैं।

मानवीय संबंधों का संघर्ष: महानगर में मानवीय संबंध जटिल और सतही हो जाते हैं। व्यक्ति के पास समय की कमी होती है, और वह अपनी व्यस्तता के कारण दूसरों से भावनात्मक रूप से जुड़ नहीं पाता। दोस्ती और रिश्ते अक्सर स्वार्थ पर आधारित हो जाते हैं। आधुनिक हिंदी साहित्य ने इस संघर्ष को पात्रों के बीच की दूरी, उनके संचार की कमी और उनके अकेलेपन के माध्यम से दर्शाया है।

महानगर और पहचान:

महानगर में पहचान का मुद्दा एक केंद्रीय विषय है। यह पहचान केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक भी है। महानगर में लोग विभिन्न पृष्ठभूमि, संस्कृति और धर्मों से आते हैं, जिससे एक बहुसांस्कृतिक समाज का निर्माण होता है। आधुनिक हिंदी साहित्य ने इस बहुलता और इसके

कारण उत्पन्न होने वाले पहचान संकट को गहराई से दर्शाया है। महानगर में व्यक्ति को अपनी पहचान स्थापित करने के लिए एक निरंतर संघर्ष करना पड़ता है। गाँव में व्यक्ति की पहचान उसके कुल, जाति और गाँव से जुड़ी होती थी, लेकिन महानगर में उसकी पहचान उसके काम, उसकी सफलता और उसके आर्थिक स्तर से तय होती है। यह एक ऐसी चेतना है जो निरंतर आत्मविश्लेषण और आत्मसंदेह से भरी होती है। ऐसा ही एक दृश्य जगदम्बा प्रसाद दीक्षित जी का उपन्यास 'कटा हुआ आसमान' में 'प्रोफेसर नोटियाल' गाँव से शहर आकर अपनी एक नई पहचान बनाने के लिए गाँव की उस गंध एवं मलिनता को लेकर नए सपने संजोए शहर की ओर उन्मुख होता भीड़भाड़ का सामना करता है।

मधु कांकरिया का उपन्यास 'पत्ताखोर' में 'आदित्य' नामक एक नौजवान अपनी एक अलग पहचान बनाने के लिए अपने स्कूल के दिनों से संघर्ष करता हुआ कई गलत रास्तों पर भटकते हुए अपना घरबार छोड़कर कलकत्ता की छोटी सी बस्ती में आकर वहां के गरीब और बिछड़े लोगों के साथ मिलकर, उनकी मानसिक द्वन्द्वों को उनकी परेशानियों को लेकर उनके हक़ के लिए लड़ता हुआ एक संगठन की स्थापना करता हुआ अपनी एक अलग पहचान बनाता है। जब पांच वर्ष बाद आदित्य के मातापिता मिलकर अपने बेटे के प्रति चेतनशीलता को अभिव्यक्त करते है कि "बेटा मेरा इतना ही कहना है कि तुम सेवा मार्ग पर भी चलो तो बड़े पैमाने पर आगे बढ़ो 'हाइवे' पर चलो। स्वयं को सिर्फ मोहनबागान लेन तक ही सीमित मत रखो"। यह पहचान का संकट न केवल व्यक्तिगत स्तर पर है, बल्कि यह जातीय, धार्मिक और भाषाई स्तर पर भी है। महानगर में लोग अपनी पारंपरिक पहचान को बनाए रखने के लिए संघर्ष करते हैं, जबकि वे आधुनिकता को भी अपनाना चाहते हैं। यह एक ऐसा द्वंद्व है जो उनकी पहचान को जटिल बनाता है।

निष्कर्ष:

महानगर, आधुनिक हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण विषय बना हुआ है। इसने न केवल मानवीय चेतना, संघर्ष और पहचान के सवालों को नए सिरे से परिभाषित एवं चित्रित किया है, वरन इसने साहित्य को एक नया आयाम भी दिया है। यह एक ऐसा विषय है जो निरंतर विकसित हो रहा है, क्योंकि महानगर भी निरंतर बदल रहा है। केवल नगर या

शहर ही नहीं बल्कि गाँव भी आज वैश्वीकरण, बाजारवाद और डिजिटलीकरण के प्रभाव से विकसित हो रहा है। और यह साहित्य हमें महानगर की वास्तविकता को समझने और उसके भीतर छिपी मानवीय एवं क्रियाशील कथा और कहानियों को खोजने में मदद करता है। महानगर का साहित्य हमें यह बताता है कि शहर सिर्फ इमारतों का जंगल नहीं है, बल्कि यह मानवीय भावनाओं और विकसित विचारों, सपनों और संघर्षों का भी एक विशाल समंदर माना जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ:

1. हिंदी उपन्यासों में महानगरीय बोध – डॉ. राकेश रायपुरिया
2. महानगर और क़स्बा मन – कुबेरनाथ राय
3. परिंदे – निर्मल वर्मा
4. कटा हुआ आसमान – जगदम्बा प्रसाद दीक्षित
5. पत्ताखोर – मधु कांकरिया

Funding:

This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.